iFOREST INTERNATIONAL FORUM FOR ENVIRONMENT, SUSTAINABILITY & TECHNOLOGY

Divine-Grand-Digital Mahakumbh of Unity

जलवायु सम्मेलन

महाकुंभ जलवायु परिवर्तन घोषणा पत्र

16 फरवरी 2025 | प्रयागराज

प्रस्तावना

हम, आस्था-आधारित और आध्यात्मिक संगठनों, नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों, उद्योग जगत, नागरिकों और श्रद्धालुओं के प्रतिनिधि, प्रयागराज में अवस्थित गंगा-यमुना-सरस्वती के पवित्र संगम पर एकत्रित होकर, कुंभ के आध्यात्मिक एकता, सांस्कृतिक विरासत और सामूहिक चेतना के शाश्वत महत्व को स्वीकार करते हैं।

जलवायु संकट हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौती है जो पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र, मानव आजिविका और भावी पीढ़ियों के कल्याण के मार्ग में सबसे बड़ा संकट बन गया है। पूरे विष्व मे अरबों लोगों के लिये नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में हमारे धर्मगुरू और आस्था पर आधारित संगठन कार्यवाही की प्रेरणा हेतु, व्यवहार को प्रभावित करने तथा परिवर्तनकारी बदलाव लाने में एक विषिष्ट स्थान रखते है।

महाकुंभ में सनातन धर्म की शाश्वत ज्ञान परंपरा का उत्सव मनाते हुए, हम जलवायु संकट से निपटने के लिए सामूहिक कार्यवाही को प्रेरित करने में सभी धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराओं की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हैं और अपनी पृथ्वी की रक्षा हेतु एक वैश्विक आध्यात्मिक आंदोलन का आह्वान करते हैं।

कुंभ मेले का महत्व

कुंभ मेला आस्था और आध्यात्मिकता की गहन अभिव्यक्ति है, जो ज्ञान, आत्म-बोध और विविध संस्कृतियों तथा मान्यताओं के बीच सद्भाव की मानवता की शाश्वत खोज का प्रतीक है।

सदियों से, कुंभ मेला अंतर-धार्मिक संवाद को बढ़ावा देने में, शांति को प्रोत्साहित करने में और भारत की समृद्ध आध्यात्मिक विरासत को प्रदर्शित करने में एक एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य करता रहा है। यह समस्त जीवों के प्रति हमारी श्रद्धा, करूणा और सहिष्णुता की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

धार्मिक नेताओं, आस्था-आधारित और आध्यात्मिक संगठनों की जलवायु परिवर्तन शमन में भूमिका

सभी धर्मों की शिक्षाएँ एवं सिद्धान्त, पर्यावरण क्षरण को रोकने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। हिंदू धर्म प्रकृति को दिव्य मानता है और उसके संरक्षण को मानव का पवित्र कर्तव्य के रूप में स्थापित करता है। इसकी शिक्षाएँ एवं सिद्धान्त प्रकृति के साथ सामंजस्य पर जोर देते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि प्रकृति की देखभाल करना न केवल मानव विकास बल्कि आध्यात्मिक उत्थान के लिए भी आवश्यक है। ये सिद्धांत सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप हैं, जो जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। अन्य धर्म भी मानवता और प्रकृति के बीच संतुलन को प्रोत्साहित करते हैं।

धार्मिक गुरु, आस्था-आधारित और आध्यात्मिक संगठन निम्नलिखित उपायों के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों को कम कर करने में योगदान कर सकते हैं:-

1. आध्यात्मिक मार्गदर्शन और शिक्षाएं

- प्रकृति और उसकी संरचनाओं की रक्षा करने के नैतिक दायित्व की शिक्षा देना।
- उपदेशों, सभाओं और सामुदायिक कार्यक्रमों में पर्यावरण और जलवायु शिक्षा को एकीकृत करना।

2. समर्थन और प्रभाव

- स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर सषक्त जलवायु नीतियों का समर्थन करना।
- सरकारों, व्यवसायों, वैज्ञानिकों और नागरिकों के साथ मिलकर नवीकरणीय ऊर्जा, जल और ऊर्जा संरक्षण, वनीकरण और सत्त उत्पादन और उपभोग को बढ़ावा देना।
- अंतर-धार्मिक गठबंधन बनाकर आस्था-आधारित जलवायु जागरूकता को बढ़ावा देना।

3. सामुदायिक सहभागिता

- वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, जल एवं भूमि संरक्षण जैसी जमीनी स्तर की पहलों का नेतृत्व करना।
- अपशिष्ट प्रबंधन, नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा संरक्षण और पर्यावरण-अनुकूल तकनीकी को अपनाने के लिए प्रेरित करना।
- बड़े स्तर पर पर्यावरणीय परियोजनाओं के लिए अंतर-धार्मिक सहयोग को बढ़ावा देना।

4. संवेदनषील समुदायों का समर्थन

- जलवायु आपदाओं और अन्य आपदाओं के दौरान राहत प्रदान करना और सामुदायिक कार्य को सक्रिय करना।
- जलवायु आपदाओं से निपटने की क्षमता बढ़ाने हेतु समुदायिक-आधारित अनुकूलन रणनीतियों को बढ़ावा देना।

5. उदाहरण के आधार पर नेतृत्व

- धार्मिक और आध्यात्मिक संस्थानों को नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन और जल तथा भूमि संरक्षण जैसी हरित प्रथाओं को अपनाकर सतत संचालन की प्रेरित करना।
- सौर ऊर्जा संचालित उपासना स्थल, शून्य अपशिष्ट धार्मिक केंद्र और पर्यावरण-अनुकूल सामुदायिक केंद्रों का निमार्ण करना।
- पर्यावरण-अनुकूल धार्मिक आयोजनों को प्रोत्साहित करना।

6. पारंपरिक ज्ञान का समावेष

- स्थिरता के अनुरूप पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को बढ़ावा देना।
- नदियों, वनों और जैव विविधता की पवित्रता की शिक्षाओं को आधुनिक जलवायु समाधानों में शामिल करना।

INTERNATIONAL FORUM FOR ENVIRONMENT, SUSTAINABILITY & TECHNOLOGY

Divine-Grand-Digital Mahakumbh of Unity

प्रतिबद्धताएँ

उत्तर प्रदेश सरकार संकल्प लेती है कि:

- राज्य के धार्मिक केंद्रों, आस्था-आधारित और आध्यात्मिक संगठनों को नवीकरणीय ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन, ऊर्जा और जल संरक्षण, वनीकरण और अन्य पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों एवं उपायों को अपनाने में सहयोग करेगी।
- राज्य के धार्मिक केंद्रों, आस्था-आधारित और आध्यात्मिक संगठनों के लिए पर्यावरण और जलवायु शिक्षा कार्यक्रम स्थापित करने में सहायता प्रदान करेगी।
- राज्य में पर्यावरण-अनुकूल धार्मिक आयोजनों को बढ़ावा देगी।
- राज्य में आयोजित होने वाले प्रत्येक कुंभ मेले में "आस्था और जलवायु परिवर्तन" पर एक सम्मेलन आयोजित करेगी।

घोषणा

धार्मिक गुरु और आस्था-आधारित संगठन जलवायु कार्यवाही को प्रेरित करने की अपार क्षमता रखते हैं, क्योंकि वे पर्यावरण संरक्षण को नैतिक और आध्यात्मिक कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। इन भूमिकाओं को अपनाते हुए, वे मानवता को एक सत्त, न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण भविष्य की ओर मार्गदर्शित कर सकते हैं।

हम, कुंभ की आस्था और जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में उपस्थित प्रतिभागी, आज 16 फरवरी 2025 को जलवायु संकट के समाधान और ज्ञान का प्रसार करने में आध्यात्मिक और आस्था आधारित संगठनों को समर्थन देने का संकल्प लेते हैं।

हम एकता, स्थिरता और आध्यात्मिक उत्थान की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हैं। महाकुंभ घोषणा सभी आस्था-आधारित और आध्यात्मिक संगठनों, नीति-निर्माताओं, नागरिक समाज, व्यवसायों, वैज्ञानिकों और व्यक्तियों से इस प्रयास में सम्मिलित होने का आह्वान करती है। हम साथ मिलकर ऐसा भविष्य बनाएंगें, जहाँ आध्यात्मिकता और स्थिरता सह-अस्तित्व में होगीं और आने वाली पीढ़ियों को समृद्ध करेगीं।

पर्यावरणनाशेन नश्यन्ति सर्वजन्तवः ।
पवनः दुष्टतां याति प्रकृतिविकृतायते ।।

\- श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम्

पर्यावरण के नष्ट होने से सभी जीव नष्ट हो जाते हैं,
वायु प्रदूषित हो जाती है और प्रकृति विकृत हो जाती है।